अनुक्रम

भूमिका 9

समता की ओर बढ़ने का समय 15
जाति : सब मुद्दों से गर्म 22
बदले सामाजिक परिवेश में शिक्षा और शिक्षक 26
सत्ता के शीर्ष पर 29
जरूरत जिम्मेदार नेतृत्व की 33
समतामूलक समाज का सपना 37
क्या दलितों को केवल आंसू ही चाहिए 43
अब चाहिए धर्म की रोशनी 47
अनवरत साधना का अंत 52
दलित कृतियां जो चर्चा में नहीं 57
वर्ष के दलित साहित्य से गुजरते हुए 61
समाज से स्वायत्त नहीं है हिंदी साहित्य की भाषा 66
दलित साहित्य और अप्रैल का महीना 70
बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर गतिशील विचार हैं ठहरी हुई आस्था मात्र नहीं 75
राष्ट्रीय मुख्यधारा में दलित 80
स्वतंत्रता के दलित सरोकार 84
दलित-रचनात्मकता की उपेक्षा क्यों? 88
अतीत का अवलोकन करता दलित 93
मीडिया में दलितों की भागीदारी का सवाल 97
सामाजिक प्रगति की चिंता 104
बच्चे दलित बच्चे 109
हक़ में उठे कदम का विरोध क्यों? 113
पिछड़ों द्वारा दलितों का शोषण 117

बच्ची से बलात्कार और बच्ची लाल की हत्या 120
शाश्वत आपात्काल 123
वीरापांडियन के सपनों का सच 127
कल्याणकारी कार्यों की समीक्षा हो 130
अशिक्षा से बढ़ती जनसंख्या 133
कैसा सुराज है यह 136
खबर नहीं बनता दलितों का शोषण 140
फ्रांसीसी मीडिया को मत कोसिए 142
दलित ब्राह्मणों का उदय दुखद है 148
महामहिम की कविता 153
दलित स्त्री लेखन की संभावनाएं 158
सामाजिक न्याय का सपना 163
21वीं सदी के कबीर : डॉ. धर्मवीर 170
अस्पृश्यों के मंच पर अश्वघोष 176
दलित वेदना स्रोत अविद्या 184
सेतु कौन बांधेगा? 190
साहित्य के बगैर पूरा नहीं होगा यह अर्थशास्त्र 195
नब्बे फीसदी हिंदी साहित्य प्रतिगामी है 198
हिंदी-दलित पत्रकारिता : एक अखिल भारतीय रूपरेखा 201
दलितों में शिक्षा का विस्तार हो 210
लोक में पुरखे 213

परिशिष्ट : साक्षात्कार

बिना व्यवस्था बदले दलित शिक्षा की बात बेमानी 219
केवल वेदना ही नहीं, रचनात्मकता भी होनी चाहिए दलित लेखन में 222
मेरी किसी से कोई शिकायत नहीं है लेकिन 225
प्रेमचंद, नागर और नार्गाजुन भी नहीं समझ पाए दलित को 229
दलित लेखकों का साहित्यिक शोषण रुकना चाहिए 232